दुर्खीम का कृतित्व

जैसी फ्रान्सीसियों में रूढ़ि है, दुर्खीम ने अपनी सम्पूर्ण कृतियों को फ्रेन्च भाषा में ही लिपिबद्ध किया। ये सब रचनाएं अंग्रेजी भाषा में भी अनूदित हुई हैं। इधर हमारे देश में भी विभिन्न राज्यों की हिन्दी ग्रन्थ अकादमियों ने दुर्खीम की कुछ लोकप्रिय कृतियों का हिन्दी में अनुवाद किया है। दुर्खीम द्वारा लिखित पुस्तक की एक सूची हम नीचे देते हैं:

(1) डिविजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी (Division of Labour in Society, 1893) दुर्खीम की यह पहली कृति है। इस पुस्तक पर उन्हें डाक्ट्रेट की उपाधि मिली है।
(2) द रुल्स ऑफ सोशियोलोजीकल मेथड्स (The Rules of Sociological Methods, 1895)
(3) द स्यूसाइड (The Suicide, 1897)
(4) द एलिमेन्ट्री फार्मस ऑफ रिलिजियस लाइफ (The Elementary Forms of Religious Life, 1912)

यदि दुर्खीम की कृतियों के आधार पर उनका विवेचन किया जाये तो बहुत स्पष्ट है कि हमें निम्न तत्वों पर जो सैद्धान्तिक तथा अवधारणात्मक हैं, चिन्तन करना चाहिये: (1) समाजशास्त्र की अध्ययन विधि एवं सामाजिक तथ्य, (2) श्रम विभाजन एवं सामाजिक सुदृढ़ता की अवधारणा, (3) धर्म और, (4) आत्महत्या।

दुर्खीम की कुछ रचनाएं ऐसी हैं जिनका उनके जीवन काल में किसी तरह प्रकाशन नहीं हो सका। ये रचनाएं महत्वपूर्ण हैं। उनकी मृत्यु के पश्चात् प्रकाशित होने वाली कुछ रचनाएं इस तरह हैं:

(1) सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन (Sociology of Education, 1922)
(2) सोशियोलॉजी ऑफ फिलोसोफी (Sociology of Philosophy, 1924)
(3) मोरल एजुकेशन (Moral Education, 1925)

इन पुस्तकों को दुर्खीम की मृत्यु के पश्चात् उनकी पत्नी लुइस ड्रेफस ने प्रकाशित किया। कुछ अन्य रचनाएं भी हैं, जिन्हें दुर्खीम की पत्नी की मृत्यु के बाद अन्य स्रोतों ने प्रकाशित किया:

(1) द सोशियलिजम (The Socialism, 1928)
(2) द इवोल्युशन ऑफ पेडागोलोजी इन फ्रान्स (The Evolution of Pedagology in France, 1938)

Scanned with CamScanner

(3) लेकस डि सोशियोलोजि (Lecous de Sociologie, 1950)
(4) मोनटेस्क्यू एण्ड रूसो (Montesquieue and Rousseau, 1953)
(5) प्रेगमेटिजम एण्ड सोशियोलॉजी (Pragmatism and Sociology, 1955)

सार्वजनिक जीवन में भागीदारी

यह निश्चित है कि दुर्खीम ने बौद्धिक जगत में अपनी पुस्तकों और फुटकर निबन्धों द्वारा एक महत्वपूर्ण योगदान किया है। इसके अतिरिक्त, बौद्धिक दुनियाँ से बाहर निकलकर भी दुर्खीम ने फ्रान्स के सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। उन दिनों विश्वविद्यालय व्यवस्था को आम जीवन में मान्यता दिलाने के लिये भी दुर्खीम ने जी तोड़ परिश्रम किया था। विश्वविद्यालय की कई समितियों के वे सदस्य थे। यहाँ तक की शिक्षा मंत्रालय के वे सहायक भी थे। यह एक महत्वपूर्ण बात है कि दुर्खीम ने अपने पेरिस के जीवन काल में भरसक प्रयत्न किया कि समाजशास्त्र को एक स्वतन्त्र समाज विज्ञान की तरह पेरिस के स्कूलों के पाठ्यक्रम में स्थान मिल सके। उनकी दृष्टि में नागरिक शिक्षा के लिये समाजशास्त्र से अधिक महत्वपूर्ण कोई और समाज विज्ञान नहीं हो सकता था। पहले विश्व युद्ध में जैसा कि हमने कहा दुर्खीम ने जनजीवन के मनोबल को बनाये रखने के लिये कई मोनोग्राफ और पेम्फलेट भी लिखे।

जब पहला विश्वयुद्ध फ्रान्स की दहलीज पर आ गया, तब दुर्खीम ने नैतिक मनोबल के लिये जो कुछ बन पड़ता था, पूरी शक्ति से किया। इधर इनके साथ एक भंयकर हादसा हुआ। उनका पुत्र आन्द्रे जो दुर्खीम के पेरिस विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद वहीं से अपनी शिक्षा-दीक्षा समाप्त करके युद्ध में गया था। वहाँ से उसकी मृत्यु की खबर बड़े दिन से पहले जब 1915 में दुर्खीम को मिली तो जैसे दुर्खीम के प्राण ही निकल गये। आन्द्रे भाषाई समाजशास्त्र में निष्णात थे। युद्ध में उनके शरीर पर कई घाव हो गये थे। और इन असाध्य घावों ने ही उन्हें मौत की गोद में सुला दिया। दुर्खीम को आन्द्रे से बड़ी आशाएं थी। उन्हें कुछ ऐसा भरोसा हो गया था कि उनकी मृत्यु के बाद आन्द्रे समाजशास्त्र में उनके ही स्तर का एक समाजशास्त्री बन जायेगा। पर यह सब विधाता को स्वीकार नहीं था। आन्द्रे की मृत्यु के बाद दुर्खीम के पाँव जैसे लड़खड़ा गये, उनकी बौद्धिक श्वास जैसे फूल गयी। लिखने की उन्होंने बहुत कुछ कोशिश की, नैतिकशास्त्र पर वे एक पूरा ग्रन्थ ही लिखना चाहते थे, इन पर एक प्रांरभिक रूपरेखा भी बना ली थी, लेकिन यह सब नहीं हो सका और नवम्बर 15, 1917 में 59 वर्ष की आयु में वे काल कवलित हो गये।

दुर्खीम वस्तुतः एक समर्पित यहूदी थे। उन्होंने अपनी जीवन काल में असाध्य को साधने का प्रयत्न किया। जो कुछ उन्होंने कहा, व्यावहारिक रूप से करके दिखाया। उन्होंने विज्ञान और नैतिकता दोनों को एक सूत्र में बांधकर रखा। यद्यपि दुर्खीम सर्वप्रथम एक फ्रान्सीसी थे, इस पर उन्हें गर्व भी था फिर भी अर्न्तराष्ट्रीय सभ्यता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता में कोई कमी नहीं थी। वे चाहते थे कि *ज्ञान और विज्ञान* का एक मात्र उद्देश्य सम्पूर्ण मानव समाज को एक सुखमय जीवन की ओर ले जाना होना चाहिये। कैसी रूचिकर बात है कि एक ही हाड़मांस से बने दुर्खीम ने जीवन के विशिष्ट बौद्धिक एवं ऐतिहासिक संदर्भों में बखूबी अपनी भूमिका को निभाया।

Scanned with CamScanner

समाज में श्रम विभाजन : सामाजिक सुदृढ़ता और प्रकार्यात्मक विश्लेषण (Division of Labour in Society : Social Solidarity and Functional Analysis)

विविध संस्कृति, भाषा, धर्म और जातियों के लोग किस प्रकार एक समाज को बनाते हैं? इस

Scanned with CamScanner

प्रकार के समाज में व्यक्ति किस भाँति अपने निजी हितों की पूर्ति करते हैं ? दूसरे शब्दों में, व्यक्तियों की विविधता में समाज की एकता किस प्रकार बनी रहती है ? ये सब प्रश्न व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों के दायरे में आते हैं। सम्बन्धों को लेकर पूछा जा सकता है : व्यक्ति अपने निर्णय में स्वतन्त्र है या समाज के निर्णय व्यक्ति के लिये अंतिम निर्णय हैं ? व्यक्ति और समाज के बीच में सर्वोपरि कौन हैं ? ये सब प्रश्न असुविधाजनक हैं। इन्हें दार्शनिक प्रश्न भी कहा जा सकता है। लेकिन जब पूरा का पूरा समाज औद्योगिक क्रान्ति की चपेट में आ जाता है या किसी युद्ध में संकटग्रस्त हो जाता है, और जब इसकी ऐतिहासिक एकता में दरारें आ जाती हैं, तब हमारे ये प्रश्न दार्शनिक न रहकर वास्तविक बन जाते हैं। इनके उत्तर में ही समाज की एकता का निदान निहित है।

दुर्खीम की पुस्तक *श्रम विभाजन* की केन्द्रीय समस्या समाज की सुदृढ़ता है—व्यक्ति और समाज के सम्बन्ध हैं। *श्रम विभाजन* पुस्तक *द डिविजन ऑफ लेबर* (The Division of Labour, 1893) दुर्खीम की पहली कृति है। इसी पर उन्होंने डाक्टेरेट की उपाधि प्राप्त की। इस पुस्तक पर अगस्त कॉम्ट का प्रभाव बहुत स्पष्ट हैं। पारसंस, इस पुस्तक की व्याख्या *द स्ट्रक्चर ऑफ सोशल एक्शन* में करते हैं। उनका कहना है कि *सामाजिक विचारों के इतिहास में श्रम विभाजन एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।* कुछ सीमित लोगों को छोड़कर साधारण पाठकों ने इस पुस्तक को वह मान्यता नहीं दी हैं जो इसे मिलनी चाहिये। यह भी सत्य है कि यह पुस्तक तर्क एवं केन्द्रीय बिन्दुओं पर बराबर अस्पष्ट है। जिन विचारों को दुर्खीम ने अपनी आगे की रचनाओं में स्पष्ट किया है, इस पुस्तक में वे बराबर धुंधली हैं। पारसंस की इस टिप्पणी के सही होते हुए भी, निर्विवाद रूप से *श्रम विभाजन* एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसकी प्रासंगिकता आज भी तीसरी दुनियाँ के देशों के लिये बनी हुई है। इन देशों में भी हाल के चार दशकों में औद्योगीकरण हुआ है। ये देश भी हाल में स्वतन्त्र बने हैं। इनकी समस्या विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों, भाषा समूहों और एथनीसीटी को स्वायत्तता देते हुए राष्ट्र निर्माण का कार्य करना है। इस संदर्भ में शायद दुर्खीम की जितनी प्रासंगिकता इन देशों में है, यूरोप के देशों में नहीं।

यांत्रिक समाज एवं उसकी सुदृढ़ता (Mechanical Society and its Solidarity)

इस अध्याय के प्रारम्भ में हमने कहा है कि श्रम विभाजन पुस्तक में दुर्खीम का केन्द्रीय विषय व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों को देखना है। महत्वपूर्ण बात यह है कि विभिन्न जातियों, प्रजातियों, विश्वासों और आर्थिक स्तरों के लोग किस भाँति किसी भी समाज की सम्बद्धता को बनाते हैं। यह देखना है कि किस भाँति व्यक्ति अपनी पहचान अपने समाज के साथ करते हैं। इस प्रश्न के उत्तर का विश्लेषण हमें दो तरह के समाजों के वर्गीकरण में मिलता है। वास्तव में इन दोनों समाजों में सुदृढ़ता मिलती है। पहली प्रकार की सामाजिक सुदृढ़ता *यांत्रिक सुदृढ़ता* (Mechanical Solidarity) है और दूसरे प्रकार की सुदृढ़ता *सावयवी सुदृढ़ता* (Organic Solidarity) है। यहाँ हम सुदृढ़ता के इन दोनों प्रकारों को देखने से पहले यह देखेंगे कि श्रम विभाजन का तकनीकी अर्थ क्या है।

दुर्खीम का कहना है कि श्रम विभाजन की व्याख्या समाज की दशा पर निर्भर है। 19वीं शताब्दी का समाज ऐसा था जिसमें आधुनिक उद्योग का पदार्पण हो चुका था। यह उद्योग अपने विकास के दौर में धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से शक्तिशाली मशीनों को अपने

Scanned with CamScanner

अन्दर समा लेता है। ऐसे उद्योग में भारी भरकम पूँजी का निवेश भी होता है। उत्पादन की मात्रा भी विशाल होती है। और इन सब शक्तियों के परिणाम स्वरूप समाज में अत्यधिक श्रम विभाजन हो जाता है। धन्धे अनिश्चित रूप से बढ़ जाते हैं। प्रत्येक धन्धे में *विशिष्टीकरण* (Specialization) आ जाता है। उस युग में एडम स्मिथ और जॉन स्टुअर्ट मिल का अनुमान था कि कम से कम खेतीबाड़ी में तो विशिष्टीकरण नहीं आयेगा। लेकिन ये विचारक सही नहीं निकले। खेती के क्षेत्र में भी अन्य उद्योगों की तरह विशिष्टीकरण आ गया।

जब श्रम विभाजन बढ़ता है तो वह अर्थ व्यवस्था में तो परिवर्तन लाता ही हैं । लेकिन यह परिवर्तन यहीं तक सीमित नहीं रहता। इसके बढ़ते हुए प्रभाव हम समाज के विभिन्न भागों में भी देखते हैं। राजनैतिक, प्रशासनिक और न्याय सम्बन्धी कार्यों में भी श्रम विभाजन का प्रभाव देखने को मिलता है। यह प्रभाव साहित्य, कला और विज्ञान को भी अपनी चपेट में ले लेता है। यहाँ तक कि दर्शनशास्त्र, उसकी वैचारिकी और विधि में भी हमें विशिष्टीकरण देखने को मिलता है। वे व्यक्ति जो विज्ञान के क्षेत्र में काम करते हैं, उनमें भी बढ़ता हुआ विशिष्टीकरण स्पष्ट दिखायी देता है।

इस विशिष्टीकरण के संदर्भ में हम यह देखें कि श्रम का अर्थ क्या है : आखिर श्रम की परिभाषा क्या है ? सामान्यतया दुर्खीम की परिभाषा में यह याद रखने की बात है कि *उनका श्रम विभाजन अर्थशास्त्रियों द्वारा परिभाषित श्रम विभाजन नहीं है। अर्थशास्त्री तो कहते हैं कि समाज की विभिन्न गतिविधियों का और इस अर्थ में धन्धों का जो विभाजीकरण है, वहीं श्रम विभाजन है। दुर्खीम इस तरह की परिभाषा को स्वीकार नहीं करते। उनका कहना है कि वास्तव में समाज के सदस्यों में सामाजिक और सांस्कृतिक विभेदीकरण (differentiation) अर्थात् अन्तर होता है। यह सामाजिक और सांस्कृतिक अन्तर हमे श्रम विभाजन में देखने को मिलता है। इस दृष्टि से श्रम विभाजन तो केवल सामाजिक-सांस्कृतिक विभेदीकरण की एक अभिव्यक्ति मात्र है। अतः मूल रूप से श्रम विभाजन आर्थिक यानी उद्योग धंधों का विभाजीकरण न होकर सामाजिक और सांस्कृतिक विभेदीकरण है।*

इसे यदि भारतीय संदर्भ में लें तो हमारे यहाँ विभिन्न वर्ण हैं। ये वर्ण ब्रह्मा द्वारा पैदा किये गये हैं, जैसा कि पुरूष सुक्त कहता है, जैसा कि गीता में कृष्ण कहते हैं : 'चारों वर्णों की सृष्टि मैंने की है।' वे वर्ण श्रम विभाजन में बंटे हुए न होकर पवित्र और अपवित्र की धारणा से बंटे हुए है। ब्राह्मण पवित्र इसलिये हैं कि उनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से हुई है, और शुद्र क्योंकि चरण से निकले हैं, अपवित्र है। *भारतीय संदर्भ वर्णों का वर्गीकरण वस्तुतः सामाजिक और सांस्कृतिक विभेदीकरण की अभिव्यक्ति मात्र है।* दुर्खीम का श्रम विभाजन इस भाँति सामाजिक भेदभाव पर निर्भर है। यांत्रिक और सावयवी समाजों में दुर्खीम ने जिस तरह का श्रम विभाजन पाया है, वह मूलतः दोनों समाजों की सुदृढ़ता के कारण है। अतः जब हम यांत्रिक समाजों में श्रम विभाजन और सामाजिक सुदृढ़ता को देखते हैं तो इसका बुनियादी कारण समाज की प्रकृति है।

श्रम विभाजन की समाज के लिये क्या उपयोगिता है ?

जब हम यांत्रिक सुदृढ़ता की व्याख्या करते हैं तो बहुत स्पष्ट रूप में हम यह देखना चाहते हैं कि इस प्रकार के समाज का श्रम विभाजन किस भाँति इस समाज में सम्बद्धता और सुदृढ़ता

Scanned with CamScanner

को लाता है। श्रम विभाजन में क्रियाएँ होती हैं। ये क्रियाएँ किसी भी समाज की आवश्यकताएँ होती है। दुर्खीम *क्रिया* (Function) के दो अर्थों का उल्लेख करते हैं। एक *क्रिया का मतलब कुछ गतिविधियों को करना होता है। कारखाने में करघे को चलाना या रसोई घर में भोजन बनाना, क्रिया है। इसमें गतिविधि है। क्रिया का यह अर्थ सामान्य है। इसमें क्रिया करने के परिणाम (Consequences) क्या होते हैं, इसका कोई अर्थ नहीं लिया जाता। यहाँ तो क्रिया का मतलब कुछ न कुछ काम करना है। श्रम विभाजन की क्रिया केवल सामान्य क्रिया नहीं है। यह क्रिया समाज की कतिपय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये की जाती है।* हम अपने शरीर के बारे में पाचन और श्वसन क्रिया के कार्यों की बात करते हैं। लेकिन जब हम कहते हैं कि पाचन और श्वसन के शरीर के लिये कुछ कार्य है तो हमारा मतलब यह है कि पाचन क्रिया में कुछ अम्ल और रस भोजन में शामिल होते हैं या श्वसन क्रिया में रक्त साफ होता है तो *क्रिया का अर्थ यहाँ उसके परिणामों का शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये होता है।* क्रिया के इस अर्थ को दुर्खीम सामाजिक व्यवस्था पर लागू करते हैं। *समाज की कुछ आवश्यकताएँ हैं—सदस्यों के लिये भोजन की उपलब्धि, पहनने के कपड़ों की व्यवस्था, आवास और सुरक्षा की प्राप्ति जिनकी पूर्ति श्रम विभाजन करता है। अतः दुर्खीम जब यांत्रिक समाज में, और इसी तरह सावयवी में, श्रम विभाजन की व्याख्या करते हैं तो उनका यह कहना है कि यांत्रिक समाज की कुछ संस्थागत आवश्यकताएँ होती हैं, और श्रम विभाजन इन आवश्यकताओं को पूरा करने का काम (Function) करता है।*

दुर्खीम इस बात पर अधिक जोर देते हैं कि *श्रम विभाजन वैयक्तिक (Subjective) आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता, यह तो केवल सामूहिक या समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।* यांत्रिक समाज की पहली और शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता सामाजिक सुदृढ़ता की है। और इस समाज में जैसा भी श्रम विभाजन है, वह समाज को सुदृढ़ता प्रदान करता है। इस सुदृढ़ता की क्रियान्विति में समाज की *आचार संहिता* (Moral Code) की बहुत बड़ी भूमिका है। इस आचार संहिता का आधार *सामूहिक चेतना* (Conscience Collective) है। यांत्रिक सुदृढ़ता को बनाये रखने वाले निम्न कारक हैं:

Scanned with CamScanner